ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हिंदी ऑनलाइन कक्षा में आप सभी का स्वागत है|

कक्षा -६

हिन्दी (LOWER)

पाठ -6

मदर टेरेसा

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

पाठ प्रवेश-

कहते हैं दुनिया में अपने लिए तो सब जीते हैं, लेकिन जो दूसरों के लिए कार्य करता है,वहीं महान कहलाता है।ऐसे व्यक्तियों का जीवन प्रेरणादायक होता है।ऐसी ही महान आत्मा थीं मदर टेरेसा। इनके बचपन का नाम 'अगनेस गोंझा बोयाजिजू' था। मदर टेरेसा दया, प्रेम,त्याग और निस्वार्थ भाव की प्रतिमूर्ति थीं। इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन दीन- दरिद्र, बीमार, लाचार और असहाय लोगों की सेवा में न्योछावर कर दिया। परोपकार की भावना उनके मन में भरा था।ऊंच - नीच और अमीर - गरीब में भेदभाव न करते हुए उन्होंने दीन- हीन दुखियों और अनाथों की सेवा की है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

संबंधित प्रश्न-

१. किसे महान कहा जाता है?
२. मदर टेरेसा का बचपन का नाम क्या था?
३. मदर टेरेसा किसकी प्रतिमूर्ति थे?
४. मदर टेरेसा का जीवन किन के लिए समर्पित था?

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

सामान्य उद्देश्य–

- पाठ के मूल भाव को समझने के लिए छात्रों को तैयार करना।
- मात्राओं के प्रयोग का उचित ज्ञान करवाना तथा उनकी पहचान मजबूत करवाना।
- शब्दों का सही उच्चारण सिखाना।
- छात्रों के शब्द भंडार को समृद्ध करना।
- छात्रों को नए शब्दों से परिचित कराना और उन्हें पाठ के सार का प्रस्तुतीकरण करने की कला सिखाना।
- संज्ञा, विशेषण, लिंग का प्रयोग सिखाना।

विशिष्ट उद्देश्य–

- छात्रों को महान लोगों और उनके महत्व के बारे में बताना।
- पाठ के मूल भाव को समझ उसे जीवन में उतारने का सामर्थ्य जगाना।
- उनहें यह सीख देना कि समाज के हित के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।
- साथ ही अपने भीतर सदैव एक आत्मविश्वास रखना चाहिए।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

सारांश-

ममता और सेवा की साक्षात मूर्ति मदर टेरेसा के जीवन- चरित्र का वर्णन कर उनकी विशेषताओं का चित्रण किया गया है।१८ वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने अपना जीवन दीन- हीन अनाथों की सेवा में समर्पित कर दिया।ये लारेंटो कॉन्वेंट में अध्यापिका बनकर भारत आईं।बाद में प्रधानाध्यापिका नियुक्त हुईं। सन् १९४६ में दार्जिलिंग में मानव- सेवा करने का संकल्प लिया।अपना सारा जीवन- दुखियों, गरीबों,अपाहिजों,कोढ़ियों आदि की सेवा में लगा दिया। कोलकाता में अनेक शिक्षा केन्द्र, कुष्ठ रोग चिकित्सा- केंद्र, भोजनालय तथा असहाय बूढ़ों को सहला देने के लिए पहला ' निर्मल हृदय होम' स्थापित किए। इन्हें शान्ति पुरस्कार, पद्मश्री,नोबल पुरस्कार तथा भारत रत्न से विभूषित किया गया। महारानी एलिज़ाबेथ ने मदर टेरेसा को भारत में ही' आर्डर- ऑफ मेरिट' की उपाधि दी।५ सितंबर,१९९७को ये स्वर्ग- सिधार गई। इनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है, उसे पूरा करना मुश्किल है।

गृहकार्य- पाठ को पढ़कर कठिन शब्दों को रेखांकित करो।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow